International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 18-09-2022, Accepted: 05-10-2022, Published: 21-10-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 41-48

समाज सुधारक के रूपः गाँधी जी

डॉ. प्रमिला वास्केल
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शासकीय महाविद्यालय जयसिंहनगर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रह कर ही मनुष्य का विकास संभव है। समाज के विकास को विकसित करने में कई विद्ववानों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिसमें महात्मा गाँधी का विशेष स्थान रहा। महात्मा गाँधी जी का राजनीतिक व आर्थिक विचारों के साथ–साथ सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी उनके विचारों और कार्यो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गाँधी जी आधुनिक समाज तथा राज्य के स्थान पर एक अन्य नवीन समाज की स्थापना करना चाहते थे, जो कि उनकी नजर में आदर्श समाज था। अहिंसा पर आधारित इस समाज में सरकार का रूप क्या होगा, उसको निश्चित करने का अधिकार वे जनता पर ही छोड़ देना चाहते थे। गांधी जी के अनुसार ''अहिंसा पर आधारित समाज में सरकार की रूपरेखा क्या होगी, मैं जानबूझकर इसे वर्णन नहीं कर रहा हूँ जब समाज अहिंसा नियम के अनुसार स्वयं बन जाएगा तो उसका रूप आज के समाज के रूप में पूर्णतया अलग होगा, परंतु मैं इस बात को पहले से ही नहीं बतला सकता कि पूर्णरूप से अहिंसा पर आधारित सरकार कैसी होगी।'' गांधी जी के द्वारा समाज में व्याप्त अस्पृश्यता निवारण और सामाजिक समानता की स्थापना के पिछे एक अनोखा दर्शन है। जिसके अंतर्गत छुआ–छूत मानने वालों को प्रायश्रित का मार्ग दिखाया जिन लोगो के साथ भेद–भाव किया जाता है उनको समानता के स्तर पर लाने का प्रयास कर एकता स्थापित करने का भाव उत्पन्न होना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजनैतिक आजादी के साथ–साथ सम्पूर्ण सामाजिक समता की स्थापना का लक्ष्य भी सामने रखा। उन्होंने देखा कि भारत गुलाम क्यो बना इसके कारणो की खोज की और पाया कि भारत में जाति भेद–भाव, सामाजिक अन्याय, छूआ–छूत, महिलाओं की निम्न स्थिति आदि अनेक कारण है जिससे हमारा समाज कमजोर बना। इन सभी कारणों के निराकरण हेंतु गांधी जी ने विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों संचालित कर एक सामाजिक सुधार के रूप अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधी जी के द्वारा समाज सुधार एवं समाज के विकास के लिए विभिन्न आंदोलन चलाये जिसमें साम्राज्यवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि का भरसक विरोध किया गया। गांधी जी के द्वारा समाज सुधार के लिए चलाये गये आंदोलन का वर्तमान में अनुकरणी व प्रासंगिक महत्व है। प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकडो पर आधारिकत है जिसमें गांधी जी के समाज सुधारक विचारों को बताने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः समाज सुधारक, गाँधी जी, सामाजिक प्राणी

प्रस्तावना
भारतीय सामाजिक विचारकों में महात्मा गाँधी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। महात्मा गांधी जी मोहनदास करमचन्द गाँधी गुजरात के काठियावाड़ जिले में पोरबंदर नामक स्थान पर 2 अक्टुबर, 1869 ईस्वी को एक धार्मिक परिवार में हुआ था। महात्मा गांधी जी के विचारों में सामाजिक, राष्ट्रीय, आर्थिक, शैक्षिणक एवं नैतिक दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। गांधी जी ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष का इतना गहन चिन्तन–मनन किया है कि यह कहना अत्यंत कठिन है कि गाँधी जी दार्शनिक हैं या समाजशास्त्री, राजनीतिज्ञ हैं या अर्थशास्त्री, समाज सुधारक है या समाज विचारक। गांधी जी ने विवाह, परिवार, सामाजिक व्यवस्था, उत्पादन व विवरण प्रणाली, अर्थव्यवस्था, हरिजन समस्या, स्त्रियों की स्थिति, मानव आचार व व्यवहार आदि सभी पर अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किये है। 'सर्वोदय व्यवस्था' के रूप में सामाजिक व्यवस्था का विचार प्रस्तुत किया था जिसका अर्थ था – 'सबका उदय' अर्थात सभी की प्रगति। भारतीय समाज में फैली अनेक बुराइयों यथा अस्पृश्यता, बाल–विवाह, विधवाओं की दुर्दशा, समुद्र यात्रा की मनाही, लड़कीयों को शिक्षा की मनाही आदि का घोर विरोध किया। गांधी जी अहिंसात्मक, स्वालम्बी एवं स्वतंत्र समाज की रचना करने के पक्षधर थे।

महात्मा गाँधी और स्त्री विमर्श
भारतीय जीवन शैली, भारतीय संस्कृति, भारतीय संस्कृति, भारतीय परंपरा, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीयपिता मोहनदास करमचंद गांधी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय समाज की परिकल्पना गाँधी जी राम–राज्य के आधार पर करते है। गाँधी जी ऐसे समाज के निर्माण का स्वपन देखते थे जिसमें न्याय, समानता व शांति भारतीय समाज की प्रमुख धरोहर हो। गाँधी जी के अनुसार भारत में न्याय, समानता व शांति तब तक स्थापित नहीं हो सकती जब तक स्त्रियों को भी अपने अधिकार और कर्तव्यों का ज्ञान न हो। समाज में महिलाओं के अधिकारों के विषय में गांधी जी के विचारों एवं योगदान का अत्यंधिक महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान स्त्री विमर्श की अस्मिता व स्वतंत्रता संबंधी आंदोलन का गांधी जी पुरजोर समर्थन करते है। गांधी जी पुत्र–पुत्री के साथ एक समान व्यवहार करने में विश्वास करते थे भारतीय राजनीति में गांधी जी के पर्दापण के साथ महिलाओं के विषय में एक नए नजरिये की शुरूआत हुई। नारी के संबंध में गांधी जी की समन्वित सोच व सम्मानपूर्ण भाव का आधार माँ व बहन रही। बारबर साउथर्ड के अनुसार गांधी जी की

नारीवादी सोच में दो तत्वों की सर्वाधिक भूमिका है ''पहला हर स्तर पर तथा हर मायने में स्त्री–पुरूष समानता तथा दोनों के विशिष्ट लैंगिक भिन्नता के मद्देनजर उनके सामाजिक दायित्वों में भिन्नता।'' गाँधी जी महिलाओं को एक ऐसी नैतिक शक्ति के रूप में देखना चाहते थे जिनके पास अपार नारीवादी साहस हो। एक समाज–सुधारक के रूप में गांधी ने स्त्री – उत्थान के लिए भरसक प्रयत्न किए। गांधी जी ने बार–बार यही स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि स्त्रियाँ किसी भी दृष्टि में पुरूषों से हीन नहीं है। गांधी जी दहेज प्रथा के खिलाफ थे दहेज प्रथा एक ऐसी सामाजिक बुराई है जिसने भारतीय महिलाओं के जीवन के पददलिय बना दिया। गांधी जी इसे 'खरीद–बिकी' का कारोबार मानते है। गांधी जी के अनुसार कोई भी युवक, जो दहेज को विवाह की शर्त रखता है, अपनी शिक्षा को कलंकित करता है, अपने देश को भी कलंकित करता है और नारी जाति का अपमान करता है। गांधी जी बाल विवाह के विरोधी थे शारदा अधिनियम में शादी की उम्र 14 साल तक बढ़ा देनी चाहिए। वहीं गांधी जी को महसूस हुआ कि यह 16 या 18 साल तक बढ़ा देनी चाहिए। वहीं गाँधी जी का आग्रह है कि बेटी विधवा हो जाए तो दुसरी विवाह करा देना चाहिए। गांधी जी को इस बात पर पूरा यकीन था कि आर्थिक रूप से स्वतंत्रता महिला सशक्तिकरण में अहम् भूमिका अदा कर सकती है। महात्मा गाँधी जी ने स्त्रियों के संदर्भ में न सिर्फ नये कानून के निर्माण की बात की बल्कि स्त्री असमानता के इतिहास को बखूबी समझते हुए उसके समाधान की रूपरेखा भी प्रस्तुत की।

महात्मा गाँधी और शिक्षा

महात्मा गांधी ने अपनी जीवन यात्रा या यों कहें बालक मोनिया से बैरिस्टर मोहनदास करमचंद गांधी तक की यात्रा के दौरान शिक्षा के द्वारा सामाजिक सांस्कृतिक परिर्वतन को बड़ी शिद्त से महसूस किया। गांधी जी ने ग्रमीण पाठशालाई परिवेश के साथ–साथ ज्ञान विज्ञान से चमत्कृत पाश्चात्य परिवेश का व्यक्तिगत अनुभव था। शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन को समझते हुए गांधी जी ने आज से कई दशकों पूर्व सम्पूर्ण भारत के लिए निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की वकालत की और बुनियादी तालीम की रूपरेखा प्रस्तुत की। इसके तहत सभी लड़के– लड़कियों को प्राथमिक शिक्षा देना अनिवार्य था जिसका अंतिम उद्देश्य स्वावलम्बी नागरिक तैयार करना था। स्त्रियों की शिक्षा के संदर्भ में गांधी जी की दृष्टि समानता पर आधारित थी। मनोवैज्ञानिक व आर्थिक आधारों पर गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा की अवधारणा दी। इसके तहत उनको अक्षर ज्ञान के साथ साथ स्वावलम्बी बनाने का विचार निहित था। स्त्रियों को मानसिक गुलामी का एहसास तथा उससे मुक्ति की संभाव्यता के लिए उन्हें शिक्षित करना आवश्यक था। शिक्षा में चरित्र व नीति पर सर्वाधिक बल था। यद्यपि उन्हें किसी भी प्रकार की शिक्षा की मनाही नहीं थी पर वह स्त्री गुणों के अनुकूल हो तो अच्छा है। गाँधीजी का मानना था कि एक बेटी की शिक्षा पूरे कुल को पढ़ाने जैसा है। गाँधी जी का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है। गाँधी जी का मूलमंत्र था'' शोषण विहीन समाज की स्थापना करना '' उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है। गांधी जी का मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है।

महात्मा गाँधी और स्वच्छता

गाँधी जी ने अपने बचपन में ही भारतीयों में स्वच्छाता के प्रति उदासीनता की कमी को महसूस कर लिया था गाँधी जी किसी भी सभ्य और विकसित मानव समाज के लिए स्वच्छता के उच्च मानदंड की आवश्यकता को समझा। गाँधी जी में यह समझ पश्चिमी समाज में उनके पारंपरिक मेल जोल और अनुभव से विकसित हुई। अपने दक्षिण अफ्रीका के दिनों से लेकर भारत तक वह अपने पुरे जीवन काल में निरंतर बिना थके स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करते रहे। गाँधी जी केलिए स्वच्छता एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा था। गाँधी जी ने समाजशास्त्र के महत्व को समझा और स्वच्छता के महत्व को समझाया। गाँधी जी इस बात को समझते थे कि किसी भी इलाके में बहुत भीड़भाड़ गंदगी की एक मुख्य वजह होती है। दक्षिण अफ्रीका के कुछ शहरों में विशेष इलाको में भारतीय समुदाय के लोगों को पर्याप्त जगह और ढ़ाचागत सुविधाएं नहीं मुहैया कराई गई थी। गाँधी जी मानते थे कि उचित स्थान, मूलभूत और ढांचागत सुविधाएं और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी नगरपालिका की है। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा था कि ''नगरपालिका की आपराधिक लापरवाही और सफाई के प्रति भारतीय निवासियों की अज्ञानता की वजह से कई इलाको को पूरी तरह गंदा रखने की साजिश रची गई थी।''गाँधी जी लोगों को स्वच्छता व सफाई के मूल्य प्रति जगरूक किया। गांधी जी ने स्कूली और उच्च शिक्षा के पाठयक्रमों में स्वच्छता को तुरंत शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया था। गुरूकुल के बच्चों के लिए स्वच्छता और सफाई के नियमों के ज्ञान के साथ ही उनका पालन करना भी प्रशिक्षण का एक अभिन्न अंग हिस्सा होना चाहिए। गाँधी जी ने राजनीतिक स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता जागरूकता पर जोर दिया। गाँधी जी का मानना था कि यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं तो वह स्वस्थ नहीं अर्थात एक अस्वस्थ व्यक्ति एक स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं कर सकता है। गाँधी जी ने स्वच्छता को जीवन का एक अभिन्न अंग कहा है। शारीरिक कल्याण और एक स्वस्थ वातावरण के लिए सफाई को एक महत्वपूर्ण अंग माना था। व्यक्तिगत रूप से अपने आस–पास सफाई रखने की जिम्मेदारी सबकी बनती है और प्रत्येक व्यक्ति का समाज व वातावरण को स्वच्छ बनाने का दायित्व समझाने का प्रयास किया। गाँधी जी स्वयं सफाई करते थे वे मानते थे कि स्वस्थ रहने के लिए स्वयं को सफाई करने की आदत होनी चाहिए। गाँधी जी के अनुसार सफाई कार्य भारत में एक विशेष कार्य होना चाहिए, लोगों को सफाई करने के लिए अपने आप को आदी बना लेना चाहिए ताकि कभी भी अपने आस–पास कोई भी व्यक्ति गंदीगी ना सहन कर पाये। हर व्यक्ति अपने आप में ही एक सफाई कर्मी होना चाहिए। गांधी जी ने कहा कि ''अगर हम भारत से महामारी को खत्म कर देते है तो हम स्वराज्य के लिए ज्यादा मजबूत हो जाऐगे।''

महात्मा गाँधी और अस्पृश्यता

महात्मा गाँधी को दुनिया भर में अहिंसा, असमानता और शोषण का प्रबल विरोधी माना जाता है। गाँधी जी को हिन्दू धर्म कि जिस परंपरा से भयंकर विरक्ति थी वह थी अस्पृर्श्यता थी। गाँधी जी आजादी के लिए लोगों को एकजुट करने लगे थे,

उस समय भारत में अस्पृश्यता का बोल–बाला था उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों से छुआछूत करते थे मन चाहा काम कराते थे। गाँधी जी के अनुसार किसी को रंग व जाति के आधार पर किसी से भेद–भाव के विरोधी थे, वे भारतीय समाज में व्याप्त छुआछूत को बहुत बड़ा कलंक मानते थे साथ ही धर्म की सबसे बड़ी विकृति मानते थे। गाँधी जी कीदृष्टि में जाति व वर्ण का कोई स्थान नहीं था। सदियों से चली आ रहीं कुरीतियों व रूढ़िवादिता, धर्मान्धता के सख्त विरोधी थे। अस्पृश्यता को लेकर गांधी जी ने देश भर मे कई आंदोलन चलाये व यात्रा की थी छुआछूत के चलते निम्न जाति के लोगों का मंदिर में प्रवेश वर्जित, पाठशाला में जाना, महिलाओं के अधिकारों के लिए गांधी जी जीवन पर्यन्त सभी लोगों को समानता का स्तर मिले बराबरी का अधिकार मिले। गांधी जी के अनुसार एक आदर्श राज्य समाज में स्वतन्त्रता, समानता सहयोग और सौहार्द की भावना पर आधारित है, जिसमें हर व्यक्ति का अपने विचार व्यक्त करने और समुदायों के सृजन की स्वतन्त्रता होगी। इस समाज के अन्तर्गत जाति, धर्म, भाषा, वर्ण, और लिंग आदि के भेदभाव के बिना सभी व्यक्तियों को समान सामाजिक और राजनैतिक अधिकार प्राप्त होगे। समाज के उत्थान के समान मौके सुलभ किये जाने पर जीवन भर प्रयत्न किया। जिससे एक मनुष्य दुसरे मनुष्य का शोषण न कर सके और हर व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व का विकास करने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता मिले।

महात्मा गाँधी और सत्याग्रह

गाँधी जी की सत्य और अहिंसा, साध्य और साधन की श्रेष्ठता एवं व्यक्ति की नैतिक पवित्रता में दृढ़ आस्था थी और अपने इन्हीं विश्वासों के आधार पर उन्होंने बुराई को समाप्त करने के उद्देश्य से गाँधी जीने एक नवीन पद्धति को अपनाया। गाँधी जी के अनुसार सत्याग्रह के नियम और सत्याग्रही के गुणों का उल्लेख किया और उनका पालन किया जाय, तो सत्याग्रह निश्चित रूप से एक श्रेष्ठ, अहिंसक और अत्यधिक प्रभावशाली अस्त्र है। सत्याग्रह के अन्तर्गत अहिंसा के सिद्धान्त को नीति के रूप में नहीं, वरन् आदर्श के रूप में अपनाया जाता है, जिसमें अपने अत्याचारियों के विरूद्ध कोई द्वेषभाव न रखते हुए अपनी अन्तरात्मा की आवाज का अनुसरण किया जाता है और किसी भी परिस्थिति में सत्य के प्रतिपादन से पीछे नहीं हटा जाता। यदि सत्याग्राही की सघर्ष में मृत्यु भी हो जाये तो भी आवश्यक हो जाता है। गाँधी जी का कहना था कि सत्याग्रह का उद्देश्य है विरोध का अन्त करना, न कि विरोधी का। सत्याग्रह स्वाश्रित है।

महात्मा गांधी और अहिंसा

गाँधी जी अहिंसा को मानव स्वभाव में विद्यामान गुण मानते थे और उनका विचार था कि मनुष्य स्वभावतः अहिंसा प्रिय है एवं वह परिस्थितिवश ही हिंसावान बनता है। मनुष्य की अहिंसक वृति का ही प्रमाण है कि आदिमा काल का वह व्यक्ति जो परिस्थितिवश नरभक्षी के रूप में जीवन गुजारता था, आज का सभ्य और सुसंस्कृत प्राणी बन गया है। इस तरह समस्त मानव इतिहास में हम देखते है कि मनुष्य की अहिंसक प्रवृति का विकास हो रहा है। इसमें संदेह नहीं कि संसार में हिंसा का पूर्ण अनस्तित्व नहीं है, यह संसार में विद्यमान है और कभी–कभी अपना रौद्र रूप भी प्रकट करती है, परंतु समाज के विकास का इतिहास यही बताता है कि मनुष्य मुख्यतः अहिंसा प्रिय है और उसकी इस अहिंसक प्रवृति के कारण ही मानव जाति में बढ़ोतरी हो रही है। इस तरह अहिंसा को मानव जगत का सर्वोच्च नियम मानते हुए महात्मा गांधी का मत था कि अहिंसा के आधार पर ही एक सुव्यवस्थित समाज की स्थापना और मानव जीवन की भावी उन्नति सम्भव है साथ ही ''अहिंसा मेरे धर्म का पहला सिद्धन्त है और यही मेरे कर्म का सिद्धान्त भी है।''

उपसंहार

महात्मा गाँधी एक महान समाज सुधारक एवं आदर्श समाज की स्थापना में विश्वास करते थे। महात्मा गाँधी न केवल भारत अपितु विश्व के महान विचारक थे। उन्होने ऐसी समाज रचना, राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक प्रणाली और नैतिक दृष्टि को विकसित किया जो मानवता को स्थायी शांति और समृद्धि की ओर ले जाने में सहायक है। गाँधी जी के सामाजिक विचारों ने उनके चिंतन को सामाजिक आधार प्रदान किया। समाज सुधारक के रूप में गाँधी जी ने विशेषकर उन लोगो के लिए काम किया जिनका जीवन नरक से भी बद्तर था, मानव जीवन के नैतिक मूल्यों से कोसों दुर, सामाजिक कुरीतियों, अन्याय और निरंकुशता में लिप्त लोगो में अपने प्रभावकारी सामाजिक, आर्थिक क्रांतिकारी विचारों के आधार पर उन लोगो का उद्धार कर प्रभावकारी लोकतंत्र की स्थापना की। न्याय और समानता पर आधारित समाज की नींव डालकर विश्व शांति के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

संदर्भ सूची

1. कुमारी, पिंकी ''महात्मा गाँधी और स्त्री विमर्श'' ideal Research Review, 2019:62(1).
2. Jagranjunction.com
3. httpshindi.indiawaterportal.org.
4. www.mkgndhi.org
5. मल्होत्रा, ए. पी. (2013), ''राजनीति सिद्धांत एवं विचार'' रावत प्रकाशन नई दिल्ली।
6. डॉ. संकेत कुमार चौकसे ''महात्मा गाँधी की सिवनी यात्रा एवं उसका राजनैतिक प्रभाव असहयोग आंदोलन के विशेष संदर्भ में'' दिव्या शोध समीक्षा'', 2016:1:(9).
7. ignited.in